मधुबन ओम् शान्ति अंक 303 अक्टूबर 2017

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(13-09-17)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा उड़ती कला का अनुभव करने वाले, पवित्रता के ताजधारी, परमात्म दिलतख्त के अधिकारी, हू इज़ हू की लिस्ट में नम्बरवन आने वाली निमित्त टीचर्स बहनें तथा देश-विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - विश्व के चारों ओर देश विदेश में बाबा की बेहद सेवाओं को देखते वाह बाबा वाह के गीत स्वत: निकल रहे हैं। बाबा अव्यक्त हो करके भी आज दिन तक कितनी पालना दे रहा है। हम बच्चे उसी अव्यक्त पालना से अपनी स्थिति को अचल-अडोल, एकरस बनाकर उड़ती कला का अनुभव कर रहे हैं। साक्षी हो करके देखने चलने से सब सहज हो जाता है। हमारा इज़ी राजयोग है लेकिन ऐसे भी नहीं कि सहज कहके अलबेले हो जाएं। अलबेलेपन की भी अंश न हो, नहीं तो कमाई से वंचित रहेंगे।

कोई भी बात सामने आये, उसमें संकल्प साधारण न हों। साधारण संकल्पों से भी टाइम व्यर्थ जा सकता है। हर संकल्प में शान्ति की शक्ति हो। दिल में सच्चाई सफाई हो तो ऑटोमेटिक वह अपना काम करती रहती है। वर्तमान समय के अनुसार बाबा कहते बच्चे अब व्यक्त भाव को छोड़ो, व्यर्थ रूप से सोचना भी छोड़ो। हमारा हर संकल्प, श्वांस, समय सब सेवाओं में सफल हो। जैसे श्वांस चलता है, संकल्प आते हैं सब फायदे के लिये हैं। अपने किसी भी स्वभाव के वश हो करके याद को मिस नहीं करो। बाबा की याद में जो प्यार भरा हुआ है, उसका अनुभव करो। इस समय कदम कदम में कमाई है, सिर्फ समय वेस्ट नहीं करना है।

आजकल रोज़ की मुरली में जो इसेंस, वरदान और स्लोगन आते हैं, कितने अच्छे हैं। वही रिपीट करो, रिवाइज करते रहो तो रियलाइजेशन भी हो जायेगा और बातें रिवाइज नहीं करो। लौकिक में यह कभी नहीं कहेंगे कि पढ़ाई में ही कमाई है। पढ़ाई पूरी होने के बाद जब जॉब (नौकरी) लगे तब कमाई हो। पर यहाँ पढ़ाई के साथ-साथ कमाई है। सब बातों से हम न्यारे हैं तो उसको प्यार करने के लिए फ्री रहते हैं। जैसे वो खुद न्यारा है, ऐसे हम भी न्यारे बन ऊपर रहें तो यह सब काम भी वह कर लेता है। सिर्फ हम किसी का अवगुण न देखें, न कोई मेरा अवगुण देखे। सबके गुण देख देखकरके अपने आपको श्रृंगारो। गुणों में भी धैर्यता, सत्यता, नम्रता, मधुरता अपने आप सेवा में साथ दे रहे हैं। मुख्य बात है धैर्यता, हरी नहीं करो। हरी, वरी, करी अच्छी नहीं है। जब कराने वाला करा रहा है, तो हम किसी भी बात की फिकर क्यों करें! सेवायें कितना वृद्धि को पा रही हैं परन्तु हरेक अपने आपको चेक करे कि मेरे अन्दर कोई भी प्रकार की ईर्ष्या, द्वेष, यह ऐसी है, यह वैसी है, यह ख्यालात तो नहीं चलते! स्वयं के प्रति शुभ चिंतन में रहना, सबके लिये शुभचिंतक बनना यह बहुत सुखदाई है। ड्रामा की नॉलेज ने व्यर्थ चिंतन, परचिंतन से फ्री कर दिया है। यह क्यों हुआ? क्या हुआ? ड्रामा। मैंने देखा है सवेरे से रात्रि तक कराने वाले को जो कराना है, करा रहा है। हम करने वाले अचल अडोल रूहानी तख्त पर साक्षी होकरके पार्ट प्ले कर रहे हैं। फुलस्टॉप देने की स्थिति वा विधि बहुत अच्छी है। क्वेश्चन मार्क कभी आता ही नहीं है। बोलो, आप सब भी ऐसी ही स्थिति बना रहे हो ना!

बाकी अभी मैं लण्डन से मधुबन पहुंचने वाली हूँ। फिर तो बापदादा की सीज़न में सबसे सम्मुख मिलना होगा ही। अच्छा। अभी तो दीपावली का यादगार पर्व सम्मुख आ रहा है। सभी को दीपावली की भी बहुत-बहुत दिल से बधाई हो।

अच्छा - सर्व को याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

“आओ सच्ची दीपावली मनायें”

1) जैसे दीपमाला पर एक दीप से अनेक दीप जगाते हैं तो अनेक दीपकों की एक के साथ लगन लगना यही दीपमाला है। जैसे दीपक में अग्नि होती है ऐसे आपकी लगन ही अग्नि है। वह मिट्टी के दीपक तो कई जन्म जगाये हैं। अब यह आत्मा का दीपक जगाना है। ध्यान रहे ऐसा कोई कर्म न हो जो कुल का दीपक बुझ जाये। ऐसी कोई चलन न हो जो बापदादा की आशाओं का जगा हुआ दीपक बुझ जाए।

2) दीपक वही अच्छे लगते हैं जो अखण्ड और अटल होते हैं, जिनका घृत कभी खुटता नहीं। ऐसे दीपकों की यादगार माला है। अपने को माला के बीच चमकता हुआ दीपक समझते हो ना! इसी का यादगार दीपावली मनाते हैं।

3) दीपमाला के दिन दो बातें विशेष ध्यान पर रखनी होती है। एक सफाई और दूसरा कमाई। कमाई के लक्ष्य को लेकर सफाई करते हैं। तो सफाई भी सभी प्रकार से करना है और कमाई का लक्ष्य भी बुद्धि में रखना है, जब कमाई है तो सफाई भी जरूर होगी।

4) जब मरजीवा बने, नया जन्म, नये संस्कारों को धारण किया फिर पुराने संस्कार रूपी वस्त्रों को धारण क्यों करते हो? क्या पुराने वस्त्र अति प्रिय लगते हैं? जो चीज़ बाप को प्रिय नहीं वह बच्चों को प्रिय क्यों? आज तक जो कमजोरी, कमियां, निर्बलता, कोमलता रही हुई है वह सभी पुराने खाते आज से समाप्त करना, यही दीपमाला मनाना है।

5) अब पुराने संस्कारों के चौपड़े को भूल से भी नहीं देखना। पुराने संस्कारों का चोला फिर-फिर धारण नहीं करना, नवीनता को धारण करना, यही इस दीपावली के दिन का विशेष मंत्र है। रत्नजड़ित चोला छोड़ जड़ जड़ीभूत चोले से प्रीत नहीं लगाना।

6) जैसे जगा हुआ दीपक सबको प्यारा लगता है वैसे अपनी यादगार को देख स्मृति आने से आप सभी भी विश्व के बाप और सारे विश्व के आत्माओं को प्यारे लगते हो। अगर एक दीपक अलग जगा हुआ हो तो उसको दीपकों की माला नहीं कहेंगे। आप सब दीपमाला के बीच पिरोये हुए, जगे हुए दीपक हो ना!

7) अपने ऐसे यादगार के दिन आप निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को साक्षात्कार-मूर्त्त बन, साक्षात् बापदादा समान आत्माओं के प्रति अपनी कल्याण की भावना से, अपने रूहानी स्नेह के स्वरूप से, अपने सूक्ष्म शक्तियों द्वारा आत्माओं में बल भरने की विशेष सेवा करनी चाहिए। इसके लिए अपनी अव्यक्त स्थिति वा रूहानी लाइट माइट की स्थिति द्वारा लाइट हाउस और माइट हाउस बन एक स्थान पर रहते हुए चारों ओर अलौकिक रूहानी सर्विस की भावना और वृत्ति द्वारा सर्विस करना यही बेहद की सेवा है।

8) दीपावली के दिन अपने संस्कारों में सदा के लिए परिवर्तन करने का विशेष अटेन्शन देना चाहिए। जब यादगार रूप में आज का दिन पुराने खाते को बंद करने का महत्व है। तो अवश्य प्रैक्टिकल रूप में आप आत्माओं ने यह किया है तब तो यादगार चलता आया है। तो आज के दिन अपने पुराने संस्कारों का जरा भी रहा हुआ खाता खत्म करना।

9) पुराने खाते को खत्म करने के पहले विशेष चेक करना कि आज के दिन तक जो भी पुरुषार्थ चला उसकी रिज़ल्ट में किस परसेन्टेज तक सफलता मूर्त्त बने हैं? 1- अपने सम्पूर्ण श्रेष्ठ संकल्पों के पुरुषार्थ में चेक करो कि कहाँ तक सफलता आई है? व्यर्थ संकल्पों वा विकल्पों के ऊपर कहाँ तक विजयी बने हैं? 2- वाणी द्वारा कहाँ तक आत्माओं को बाप का परिचय दे स्नेही वा सहयोगी बनाया है? वाचा में कहाँ तक रूहानियत की अलौकिक आकर्षण आई है? 3- कर्मणा द्वारा सदा न्यारे और प्यारे, अलौकिक, असाधारण कर्म कहाँ तक कर सकते हैं? कर्मों में कहाँ तक कर्मयोगी का, योगयुक्त, युक्तियुक्त, स्नेहयुक्त रूप लाया है? 4 अपने संस्कारो व स्वरूप में अर्थात् सूरत में कहाँ तक बाप समान आकर्षण रूप, स्नेही रूप, सहयोगी रूप बने हैं? ऐसे अपना पोतामेल चेक करके अब तक जो कमी वा कमज़ोरी रह गई है उसको समाप्त कर नया खाता शुरू करना, इसको कहते हैं सच्ची दीपावली मनाना।

10) आत्मा को नया चोला (शरीर), संस्कारों के आधार से मिलता है। आत्मा के जैसे संस्कार होते हैं उस प्रमाण ही चोला तैयार होता है। तो अभी नया चोला वा नये वस्त्र कौन-से पहनेंगे? आत्मा में नये युग के संस्कार वा नये युग के स्थापक बाप जैसे सम्पूर्ण संस्कारों को धारण करना–यही नये वस्त्र पहनना है।

11) अपना सच्चा पोतामेल रखना यही पोताई अर्थात् सफाई, स्वच्छता है। जैसे पोताई करते हैं तो जो भी गन्दगी व कीटाणु होते हैं वह स्वत: ही खत्म हो जाते हैं। तो जब ऐसा पोतामेल चेक करेंगे तो जो भी कमजोरी होगी वह स्वत: ही खत्म हो

जायेगी।

12) जैसे दीपावली पर एक दो से खर्ची लेते हैं। ऐसे आपके पास कौनसी चीज़ है जो एक दो को खर्ची देंगे? विशेष दिनों पर विशेष खर्ची देनी होती है तो अब तक अपने पुरुषार्थ द्वारा जो सहज सफलता प्राप्त हुई हो वा अनुभव हुआ हो, ऐसे अपने अनुभव के ज्ञान रत्न, जिस द्वारा प्रैक्टिकल अनुभवी बन अनुभवी बना सकते हो, ऐसे रत्न एक दो को खर्ची के रूप में विशेष रूप से देना, जिससे वह आत्मा भी सहज अनुभवी बन जाये।

13) आज के दिन सर्व आत्माएं धन के प्यासी होती हैं। कितने भी करोड़पति हों लेकिन आज के दिन सब भिखारी बनते हैं। ऐसी प्यासी वा भिखारी आत्माओं को ऐसा रूहानी धन दो जिससे कभी भी आत्मा को धन मांगने की आवश्यकता ही न रहे, यह है बेहद की सेवा।

14) आप दाता, वरदाता के बच्चे, अपने वरदान की शक्ति से, ज्ञान दान की शक्ति से भिखारियों को मालामाल बनाओ। आज के दिन इन भिखारी आत्माओं के ऊपर विधाता और वरदाता के बच्चों को तरस पड़ना चाहिए। जिन आत्माओं को ऐसा तरस पड़ता है, उन्हों को ही माया और विश्व की ऐसी आत्माएं नमस्कार करती हैं, इसलिए जब लाइट जलाते हैं तो नमस्कार ज़रूर करते हैं। बुझे हुए दीपक को नमस्कार नहीं करते तो सदा जागती ज्योति बनो।

15) जैसे प्रकृति आपका आह्वान कर रही है, ऐसे आप सब भी अपने ऐसे सम्पन्न स्थिति का आह्वान करो। वह लक्ष्मी का, धन देवी का आह्वान करते हैं, आप सभी धनवान भव की स्थिति का आह्वान करो। ऐसी दीपमाला मनाओ।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 09-02-14 *मधुबन*

“सभी बाबा के इतने अच्छे, सच्चे, मीठे बच्चे बनो जो बाबा अपने गले की माला बना देवे - यह मेरी भावना है”

(दादी जानकी)

बाबा के कमरे में जाओ, झोपड़ी में जाओ, शान्ति-स्तम्भ पर जाओ, हिस्ट्री हॉल में आओ फिर जम्प लगाके यहाँ ओम् शान्ति भवन में आ जाओ, यह कितनी अच्छी यात्रा है। एक है याद, दूसरा है योग, तीसरा है स्मृति, याद ऐसी है जो कल की बात आज याद नहीं है। सुबह की बात याद नहीं है, मैं सुबह कहाँ थी अभी कहाँ हूँ और कल कहाँ होंगी। किसी ने मेरे से क्वेश्चन पूछा, मुझे कैसे विश्वास बैठे कि मैं राज्य पद पा सकती हूँ? मैंने कहा याद में रहो, यह याद यात्रा है। यात्रा में बोलना कम, ध्यान है कहाँ जाना है। मैंने चारों धाम की यात्रा की है। भक्तिमार्ग में भी यात्रा करते कभी पीछे नहीं देखते हैं। योग में सर्व सम्बन्ध माता, पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरु... उनके साथ ही सब सम्बन्ध और सर्व प्राप्तियाँ हैं। सभी सम्बन्धों में मैंने सखा सम्बन्ध का बड़ा सुख पाया है। सखा रूप में बाबा मेरा साथी बना है, जो साक्षी हो करके पार्ट बजाने में बड़ा सहज योग हो गया है। मैं अकेली नहीं हूँ। बाबा मेरा साथी है, वह अव्यक्त हो करके, निराकार और साकार मिल करके हर आत्मा को अपने जैसा निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी बना रहा है। इसमें हम बाबा को कॉपी करते हैं तो बाबा भी खुश होता है। जैसा वो करता है...। बहुतकाल से ऐसी याद और योग के अनुभव से स्मृति स्वरूप रहे हैं कि मैं कौन हूँ, मेरा कौन है? ए आत्मा, बी बाबा, सी आई एम चाइल्ड, डी ड्रामा, ई इटर्नल है, एफ फ्यूचर हमारे हाथों में है।

कर्म ऐसे करो फिर मैं पूछती हूँ योग का बल है या कर्म का फल है? फिर जैसा कर्म करेंगे...। दो बातों में बहुत अच्छे जैसे हम बंधे हुए हैं, फ्री नहीं हो सकते हैं। जैसा कर्म मैं करूंगी.. इसलिए बाबा ने समझाया है एक कर्म विकर्म बनता है, दूसरा कर्म अकर्म बनता है। याद से विकर्म विनाश, पूर्व जन्मों के भी विकर्म विनाश, अभी भी थोड़ा बहुत जो गलती हो गई, तो बाबा वो भी माफ करके अभी श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति दे रहा है। तभी योगबल है, नहीं तो योग ऐसे ही नहीं लगता। विकर्म विनाश हैं, कोई विकल्प नहीं आ सकता, न किसी का चक्कर, न टक्कर। कोई किसी के चक्कर में आ जाता है, कोई किसी के साथ टक्कर खाता है। कोई कर्म ऐसे करता है, प्रभाव में आता है और प्रभाव डालता है। तो यह क्या है? सम्भालो। मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? बाबा ने तीसरा नेत्र खोला है, त्रिकालदर्शी बनाया है। तुम ऐसे श्रेष्ठ कर्म करो

जो तेरे को देख और करें, जैसे मेरे बाबा ने किया।

सर्वशक्तिवान का बच्चा हूँ, बच्ची नहीं हूँ, बच्चे का वर्से पर हक है, बच्ची बिचारी है। उसको दूसरे के घर जाना है। बच्चा कहता है नहीं, मैं तो हकदार हूँ। उसके लिए आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार, फरमानबरदार इसके सिवाए मुझे कुछ नहीं चाहिए। जैसे आप रहे हो ना एकानामी, एकनामी, एकांत में रहना माना एक के अन्त में जाना, सबमें ऐसी दृष्टि रखना। वृत्ति, दृष्टि, स्मृति में पहले क्या? बाबा से दृष्टि लो, कितनी अच्छी है। इतना जो सर्वशक्तिवान है ना वो मेरा है और वो भी कहता है तुम मेरी हो। तो जी चाहता है यह सब बाबा के अच्छे बच्चे हैं ना। सभी ऐसे सच्चे, मीठे बच्चे बने जो बाबा गले की माला बना देवे, यह मेरी भावना है। पुरुषार्थ में निश्चय से विजय की माला बनी है। बाबा कहता है आपस में अनुभवों की शेयर करो और बातें नहीं करो, कोई सुनावे तो नहीं सुनो। कोई सुनायेगा ही नहीं। न कोई मेरी कम्पलेंट करे, न मैं किसी की कम्पलेंट करूँ क्योंकि टाइम ही नहीं है और कोई कम्पलेंट है ही नहीं।

दृष्टि, वृत्ति, स्मृति तीनों में से पहला नम्बर किसको भी दो। कान दो हैं, बाबा की बात सुनी अन्दर समाई। बाकी यहाँ से किसी ने सुनाया तो चली गई। सूक्ष्म शिवबाबा को याद करो यानि निराकारी स्थिति में रहो। और कर्म में फॉलो ब्रह्माबाबा को करो। ब्राह्मणों में भी मैं नम्बरवन ब्राह्मण हूँ, भले और भी बनें, ब्राह्मण से देवता। जैसा यहाँ पुरुषार्थ होगा वैसा वहाँ देवताओं में भी नम्बरवार होंगे। मैं चाहती हूँ कि मैं कृष्ण का जन्म आँखों से देखूँ, पहले भी न जाऊं और पीछे भी न जाऊं, यह देखके जाऊं कृष्ण का जन्म कैसे होगा। तो यह थोड़ा प्लान ड्रामा अनुसार बुद्धि में टच होता है। वही करावनहार, ऐसे कर्म कराता है, कहता है मैं नहीं करता, हम कहते हम नहीं करते। बाबा कहता है मैं कराता हूँ, करता नहीं हूँ, हम क्या कहें मैं करती हूँ?... बाबा कराता है इतने यह सब बाबा के बच्चे करते हैं।

इतना बड़ा यज्ञ रचा है किसलिए? इसमें इतने सब बाबा के बच्चे कितना प्यार से सेवा करते हैं। यज्ञ में सफल करना है, एक्स्ट्रा खर्च नहीं करना है। हम घर में 5 का भोजन बनायें या 10 का बनायें या 50 का बनाये तो कितना खर्च होता है? और फिक्र भी होता है, यहाँ तो इतना बड़ा यज्ञ इतना भोजन बनता रहता है फिर भी यहाँ किसी को कोई फिक्र ही नहीं है। भले 500 हो, 5000, हो या 20 हजार हो। सबको है कि बाबा के घर का खाते हैं। इस यज्ञ में सबका तन मन सब सफल हो रहा है। कोई तन से सेवा कर रहे हैं, कोई मन से कर रहे हैं, कोई धन से कर रहे हैं। यज्ञ की सेवा करके जीवन सफल कर रहे हैं। एक है समर्पण होना, दूसरा है जीवन सफल करना। एक भण्डारे में डाले, दूसरा सफल करे तो भण्डारे में डालने वाले को अपना मिलेगा और उसे सफल करने वाले को अपना मिलेगा। पर फालतू खर्च करे तो नुकसान किसको होगा?

बाबा ने यह बहुत अच्छा ज्ञान दिया आत्मा में मन बुद्धि संस्कार हैं तीनों को देखो मन में कहाँ चलायमानी न हो। बुद्धि शुद्ध शान्त श्रेष्ठ दृढ़ हो। संस्कार भी ऐसे, योग भी लगायें, अच्छे कर्म भी करे और स्मृति में भी रहें क्योंकि सभी को है कि टाइम थोड़ा है। कभी भी कोई भी घड़ी विनाश आया कि आया। तीन प्रकार से विनाश होगा, नेचुरल कैलेमिटीज़, सिविल वार में लड़ाई झगड़ा, एटोमिक बॉम्ब्स फटेंगे, लाखों करोड़ों खत्म हो जायेंगे। अगर अर्थक्वेक होगा, बॉम्ब फटेगा या कुछ भी होगा, हम बाप समान दया, रहम, क्षमा के सागर के बच्चे हैं इसलिए दु:ख नहीं होगा। समय पूरा होगा भगवान ने खैंच लिया। ऐसे भी याद से घर में रहते हैं, निमित्त मात्र यहाँ सेवा अर्थ है। कभी-कभी मुझे आता है कि मैं कहाँ रहती हूँ? पाण्डव भवन में, शान्तिवन में, ज्ञानसरोवर में... कहाँ हूँ? बाबा के साथ हूँ। भगवान मेरा साथी है, सारे कल्प-कल्प की छाप लग रही है। अच्छा, ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

> **"अन्त मते सो गते अच्छी तब होगी जब स्मृति में सिर्फ बाबा का ही ध्यान हो, दृष्टि में रूहानियत हो"** (दादी जानकी)

अपने को आत्मा समझके बाबा की याद में ऐसा रहें जो विकर्माजीत बन जायें। स्वदर्शन चक्र फिरायें, चक्र का ज्ञान बुद्धि में है। अन्दर ही अन्दर में मैं कौन हूँ, किसकी हूँ और मुझे क्या करने का है? यह सदा स्मृति रहे तो मायाजीत विकर्माजीत बन जायेंगे। आज बाबा ने कहा कोई बच्चा कहता है बाबा संकल्प विकल्प बहुत आते हैं तो बाबा कहते हैं बच्चे

कर्म में नहीं आना है, उसके लिए सावधान खबरदार रहना है। और आगे के लिए श्रेष्ठ कर्म करने के लिए कोई बहाना न बनाये। साधारण कर्म न करे। एक तो बाबा सर्वशक्तिवान है, दूसरा कर्म बड़े बलवान हैं तो दिन-रात, सुबह-शाम यह कभी भूले नहीं। कर्म करते कर्मयोगी और आपस में रूहानियत की खुशबू हो जिससे वायुमण्डल बहुत अच्छा बन जाता है। सतयुग में भी ऐसा वायुमण्डल नहीं होगा, अभी ऐसे है।

जो परमात्मा बाप में ज्ञान है वो हमारे में सब भर रहा है, जो हम ज्ञानी तू आत्मा परमात्मा को प्यारे लगते हैं। ज्ञान बाबा का पर बाबा हम बच्चों को देता है, समझाता है। आत्मा ज्ञान को धारण करती है, बाबा का प्यार लेती है। तो ज्ञान को धारण करने से, योगयुक्त रहने से और आपस में रूहानी कनेक्शन से यज्ञ सेवा अथक भाव से करने से सदा उन्नति होती रहती है, जितना बेहद का बाबा है और रहता भी वतन में है। बाबा कभी इसमें बैठा है, कभी यह बाबा उस बाबा की याद में बैठा है, यह दोनों सीन बड़ी अच्छी हैं। जब यह उसकी याद में है इसमें हम हर समय हर घड़ी ऐसे मीठे बाबा को फॉलो करें। फॉलो करना इज़ी है, जैसे वो करता है वैसे करें। जो कहता है वो करें। जो करता है वो करें। तो फॉलो फादर करने से सुख मिलता इलाही है।

यह संगमयुग है इसमें राइट क्या है, रांग क्या है यह पता है इसलिए क्या करना है यह पूछने की बात नहीं है। बाबा और ड्रामा, यहाँ भगवान यहाँ भाग्य, बीच में हम हैं माना हमारी स्मृति में है जो हुआ सो ड्रामा पूरा हुआ, अब क्या करने का है। यह बहुत अच्छी बात है इसने यह किया... ड्रामा, हो गया। अपनी स्मृति में सदैव बाबा का ही ध्यान हो, अन्त मते सो गति अच्छी हो, यही ध्यान यानि अटेन्शन हो। तो सूक्ष्म वृत्ति से स्मृति अच्छी बनती है। दृष्टि सबके लिए रूहानियत वाली हो, आत्मायें भाई भाई हैं। थोड़ी मेहनत है परन्तु फायण्डेशन में हम आत्मा, यह आत्मा बाबा की संतान हैं। देह के भान से परे रह बाबा कैसा है, वो क्या और कैसे करता है वो जानने से बहुत सुख मिलता है। हमने देखा हमने जाना तब तो प्राप्ति हुई है, हो रही है।

जितना ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न बनेंगे, जितना ईश्वरीय सेवाओं में किसी न किसी तरीके से सहयोगी बनेंगे उतना बाप समान बनते जायेंगे। यह छोड़ करके औरों की कमी देखना, यह बहुत बड़ी कमी है, इससे बचाओ अपने को। सबका अपना-अपना वन्डरफुल पार्ट है, हरेक को भगवान ने अपना बनाके पाप की दुनिया से दूर कहीं और ले चल... उसमें हमें साथ दे रहा है। दुनिया में कहाँ कहाँ से, किस किसको चुन चुन करके बाबा ने सुख शान्ति प्रेम आनन्द में मगन कर लिया है। सेवा, वायुमण्डल, वातावरण सुख देता है। हम और कुछ नहीं कर सकते हैं, सेवा बहुत हो रही है, ऐसे में सिर्फ हमको ऐसा खुश रहना है, हल्का रहना है तभी उन्हें लाइट का अनुभव होगा। जहाँ बाबा बिठाता है वहाँ अच्छा है यह मेरा भाग्य है, भाग्य बनाते जाओ। अच्छा, ओम् शान्ति।

“कर्मातीत बनने के लिए कर्मेन्द्रीय जीत बन कर्मेन्द्रीयों से कर्म करो”

(गुल्जार दादी जी)

आप सभी सेवा और मिलन मनाने के लिये अपने घर में पहुँच गये हो। यह चांस भी हर ज़ोन को मिलता है और खुशी-खुशी से सब निभा रहे हैं। इस चांस से सारे ब्राह्मण परिवार को नज़दीक से देखने को मिलता है। सेवा का बल भी मिलता है, फल भी मिलता है। किसी की भी सेवा करो तो पहले अपनी भी अवस्था ऐसी ही बनती है तब उसकी सेवा होती है। तो सेवा का बल अपने में भरता है और जिसकी सेवा करते हैं उनमें भी बल आता है। सेवा के चांस को प्यार से स्वीकार करके सेवायें कर रहे हैं और करते रहेंगे। सभी ऐसा सेवा का चांस लेने में खुश हैं, हम भी खुश हैं और जिस टर्न की सेवा होती है, उन पर बाबा की भी स्पेशल नज़र रहती है। यहाँ पर कोई भी सेवा करते सुबह से शाम तक सभी के मुख पर बाबा बाबा शब्द ही निकलता है। मन में भी सिवाए बाप के और कुछ याद नहीं आता। यहाँ के वायुमण्डल में हर एक बाबा की मस्ती में रहता है इसलिए बाबा के अलावा और कुछ याद आता ही नहीं है। सेवा के यह 8-10 दिन जीवन के विशेष दिन हैं इसलिए इसे

एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गँवाना क्योंकि यहाँ सब प्रकार की मदद है तो उसका लाभ लो। अपने में जो भी कमी-कमजोरी, गलतियाँ समझते हो, यहाँ बाबा के घर में छोड़के, परिवर्तन करके जाओ तो बल मिलेगा। यहाँ शक्तिशाली आत्माओं को देख करके अपनी गलती जल्दी समझ में आती है, मेरे में यह है, यह है तो वो महसूसता होती है। योगयुक्त होके अमृतवेले बाबा को सुनाके बाबा से वरदान ले सकते हैं। बाबा ने तो वरदान देने लिये ऑफर किया है लेकिन उसे लेने लिये स्थिति भी ऐसी चाहिए। चलते-चलते पुरुषार्थ ढीला होने का कारण है दृढ़ता में कमी आ जाती है। दृढ़ता माना करना ही है और जहाँ जितनी दृढ़ता है वहाँ उतनी सफलता हुई पड़ी है। कोई कैसा भी है, कुछ भी होता है फिर भी हरेक के प्रति रहमदिल बन, शुभ भावना शुभ कामना रखते सभी को बाबा के नज़दीक लाना है।

बाबा तो अब समय प्रमाण चाहता है कि मेरा एक एक बच्चा कर्मातीत अवस्था के नज़दीक आ जाये। कर्मातीत का अर्थ है अतीत (न्यारे) हो जाना फिर तो चले जायेंगे लेकिन अभी कर्मातीत का अर्थ यह है कि कर्म के बन्धन से मुक्त होना। जब चाहें कर्मेन्द्रियों से अपने को न्यारा और प्यारा कर सकें और जब चाहें तब कर्मेन्द्रियों का आधार लेके कर्म करें, वश नहीं हों। जैसे देखो कभी गुस्सा आता है, यह भी तो कर्म है ना तो जब गुस्सा आता है तब इतना ही कहते हैं अरे, शान्त हो जाओ, शान्त हो जाओ। लेकिन गुस्सा अपने तरफ इतना खींचता है जो उस बन्धन से मुक्त नहीं हो सकते हैं। इच्छायें जो उत्पन्न होती है वो इतने वश कर देती हैं जो हम चाहते हैं यह ऐसा कर्म नहीं करें लेकिन कर्म के बन्धन में आ जाते हैं। तो कर्मातीत बनना माना कर्म के बन्धन में नहीं आयें, कर्म तो करना पड़ेगा क्योंकि कर्मेन्द्रियों का आधार लिया है तो कर्म तो करेंगे लेकिन कर्म करते भी कर्म के बन्धन से न्यारा और बाप का प्यारा। तो हम सभी कर्मातीत बनने के पुरुषार्थ में हैं, कोई भी कर्म करें लेकिन मालिक होके कर्म करें क्योंकि कर्मेन्द्रियाँ मेरी हैं ना, तो जो मेरा है उसका मैं मालिक हूँ, तब तो मेरा कहते हैं। तो कोई भी कर्मेन्द्रिय कर्म के लिये मिली हुई है लेकिन वो कर्मबन्धन में नहीं लावे, ऐसे कर्मातीत अभी हम बन सकते हैं।

लेकिन कर्म के पहले आधार जो है पहले संकल्प चलता है यह करो, यह नहीं करो, संकल्प आता है और संकल्प उत्पन्न कौन करता है? मन। मन में ही संकल्प उत्पन्न होते हैं। तो कर्मातीत बनने के लिये हमको मनजीत भी बनना पड़े क्योंकि मन मेरा है ना, मैं मन कभी कोई गलती से नहीं कहेगा। कहेगा आज मेरा मन थोड़ा उदास है या मेरा मन बहुत खुश है, मैं मन आज उदास हूँ, ऐसा कोई अगर गलती से भी कहे तो सभी हँसेंगे। तो मन मेरा है अगर मन मेरा है तो मैं जो संकल्प करने चाहूँ वो कर सकती हूँ। ऐसे नहीं कि कोई इच्छा उत्पन्न हो और उसके वश मैं हो जाऊं तो यह कर्मातीत स्थिति नहीं है। कर्म के बन्धन में आ गया ना, मालिक तो मैं हूँ ना, तो कर्म के कोई भी बन्धन में न आना अर्थात् कर्मातीत। बाकी तो कर्मातीत हो जायेंगे फाइनल, फिर तो हम अपने राज्य में चले जायेंगे। लेकिन अभी कर्मेन्द्रियों के आधार में रहना है, रहते हुए भी कर्मातीत अवस्था का अनुभव करना है तो कोई भी कर्म के बन्धन में नहीं आये। उसके लिये हमको मन जीत बनना पड़ेगा, जो संकल्प चाहूँ वो कर सकती हूँ, जो संकल्प फालतू माना अयथार्थ है या व्यर्थ है तो यह व्यर्थ खत्म हुआ? इससे व्यर्थ समय भी बच जाता है।

तो कर्मातीत बनने के लिये इस समय संगम पर मन जीत भी बनना पड़े क्योंकि संकल्प पैदा होता है मन में। और मनजीत बनने के लिये मैं आत्मा मालिक हूँ, इस शरीर का, हर कर्मेन्द्रियों का मालिक मैं हूँ। जैसे हाथ को जब जैसे मोड़ना हिलाना चाहें तो हिला सकते हैं, ऐसे मन भी मेरे वश में आ जाये। जब चाहूँ जो संकल्प चाहूँ, ऐसे नहीं मैं शुभ संकल्प करना चाहता हूँ और आ जाये व्यर्थ संकल्प क्योंकि ऐसे कई बहन भाई कहते रहते हैं कि मैं तो शुद्ध संकल्प करने बैठता हूँ पर व्यर्थ संकल्प आ जाते हैं। आ जाते हैं माना मालिकपन नहीं है, आत्मा हो लेकिन मा. सर्वशक्तिवान नहीं हो तभी यह होता है, इससे सिद्ध है कि मन के ऊपर कन्ट्रोल नहीं है। मन के ऊपर कन्ट्रोल है तो मन पर जीत है। तो पहले चेक करो कर्मातीत बनने के लिये हमारी मन के ऊपर जीत है? मन के मालिक हैं? तो हम सभी अपने आपसे पूछे कर्मातीत अवस्था के नज़दीक आ रहे हैं? अपने कर्मेन्द्रियों के ऊपर कन्ट्रोल हैं? जब चाहें जिस कर्मेन्द्रियों को चाहे यूज़ करे मालिक होके चला सकते हैं? अगर आदत के कारण बुद्धि खाने, पीने, पहनने में जाती रहे तो आत्मा मालिक कर्म के वश है ना। तो यह चेक करो कि कोई कर्मेन्द्रियों के वश तो हम नहीं हैं? बाबा के साथ वही जायेगा जो कर्मेन्द्रियों को

जीता हुआ होगा। जैसे ब्रह्मा बाबा कर्मेन्द्रियों को जीतने वाला बना। ऐसे नहीं दिल हुई ना तो बोल भी दिया, कर भी दिया तो कर्म के बन्धन में बंधा हुआ कहेंगे ना। तो जो कर्मेन्द्रियों के वश होगा वो कैसे ब्रह्मा बाप समान कहलायेगा इसलिए चेक करो कौनसी कर्मेन्द्रिय अभी भी मुझे अपने तरफ आकर्षित करती है? चाहे नये हैं या पुराने सबको साथ चलना है तो समान बनना पड़ेगा। हम सभी कर्म बन्धन से न्यारे होंगे तो साथ चलेंगे। तो यही बाबा की रोज़ शिक्षा मिलती है।

देहभान से मुक्त होने वाले कर्मातीत हो सकते हैं। देहभान यानि मैं शरीर हूँ यह फीलिंग और देहअभिमान माना कोई न कोई विशेषता का अहंकार, तो देहभान से भी देह अहंकार बहुत धोखा देता है इसलिए बाबा कहता है देह अभिमान तो रखना ही नहीं है, पर देहभान से परे होना है। मैं आत्मा हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ यह देहभान से परे। कोई भी कर्मेन्द्रिय मुझे अपने तरफ खींचे नहीं तभी हम कर्मातीत बनके बाबा के साथ चलेंगे। तो ऐसे रेडी हैं? बस, यह आत्मा का पाठ जो है वो बीच-बीच में स्मृति और चेकिंग चाहिए। कर्म में आत्मा का भान भूल जाता है यानि कर्म अपने तरफ खींच लेता है। तो अभी यहाँ से यह अभ्यास करके जाओ हम कर्मातीत बनें, और सर्वशक्तिवान की शक्तियां सौगात ले जाओ। बाबा तो दे रहा है इसलिये कहता रहता है ले लो, बच्चे बाप समान बन जाओ। तो वहाँ जा करके यह हो गया वो हो गया, ऐसे नहीं कहना। तो मेरा बाबा मेरा बाबा कहते रहो, तो मेरी चीज़ भूलती नहीं है, मेरा छूटता नहीं है। उस मेरे को तो पूरा ही छोड़के जाना। अधूरा नहीं छोड़ना, छोड़ना तो पूरा छोड़ना। इसमें हिम्मते बच्चे, मददे बाप। दिल से दृढ़ संकल्प करो कि बाबा आज से मैंने यह छोड़ा तो बाबा एक्स्ट्रा मदद देगा, दे रहा है लेने वाला लेवे। दृढ़ता सफलता की चाबी है। दृढ़ता सदा साथ रहे उसके लिये बार-बार अपनी चेकिंग करो क्योंकि कोई संकल्प ऐसा आता है जो दृढ़ता कमजोर होती है। उस संकल्प को फौरन ही कट करके यही गीत गाओ पाना था सो पा लिया...।

तो बाबा के आगे अभी ऐसा दृश्य दिखायेंगे, बाबा जो आप चाहते हैं वो हम करेंगे ही। तो सभी को कर्मातीत बनना ही है तो कोई भी कर्मेन्द्रियों के वश नहीं हो जाओ फिर चेहरा कभी मुरझायेगा नहीं, खुशनुमा खिला हुआ फूल समान सदा खुश दिखाई देंगे। क्योंकि परमात्मा मिला है, कोई साधारण बात है क्या! दुनिया में परमात्मा को मिलने के लिये बिचारे क्या क्या नहीं कर रहे हैं और वो आ करके हमारा पिता बन गया इसलिए हम कितने खुशनसीब हो गये! अच्छा है, साल में एक बारी ऐसी विशाल सभा में सब इकट्ठे मिलते हैं और हम भी खुश हो जाते हैं इतने भाई बहनें कहाँ मिलेंगे फिर, अभी तो मिले हैं ना। कल बाबा भी देखके खुश हो जायेगा। और चाहिए क्या हमको? अरे, सर्वशक्तिवान बाबा हमारा हो गया और क्या चाहिए! पाना था सो पा लिया काम क्या बाकी रहा... पा लिया ना सभी ने? अरे, परमात्मा को पा लिया और क्या चाहिए? अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"आपस में एक दो के मीत बन प्यार के दीप जलाकर सच्ची दीपावली मनाओ"

प्यारे बापदादा की शिक्षाओं भरी मुरली हम सदा ही सुनते। बाबा हमें एक बार नहीं अनेक बार इशारे देता कि बच्चे तुम्हें याद की यात्रा पर पूरा-पूरा अटेन्शन देना है। यही आदि से अन्त तक की पढ़ाई है। इसमें कितना हरेक खो जाता, बाप से सच्ची प्रीत रखता, उसे अपना सच्चा मीत बनाता, वह हरेक स्वयं ही जवाब दे।

अब दीपावली आ रही है... हम दूसरों को दीवाली पर कहेंगे कि पास्ट का चौपड़ा समाप्त कर अब नया चौपड़ा बनाना है। तो हरेक खुद को भी देखे कि हमारा पुराना चौपड़ा समाप्त हुआ है। हरेक अपने चौपड़े का चार्ट निकाले। जो जितनी-जितनी दिव्य धारणा करता वह स्वयं अपना नाम ऊंचा करता। कई बार जो मुख से यह निकलता कि सदा ही तो चलना है, ऐसे तो होगा ही... लेकिन गुणगान उनका होता जो अपना रिकार्ड अच्छा बनाता, अपने गुणों की, सेवा की छाप, प्यार प्रेम की छाप डालता। तो हरेक अपने आप से पूछे – कि अगर आज हम शरीर छोड़े तो क्या हमारी ऐसी स्थिति है,

ऐसा चार्ट है हम ऐसी सेवाओं में रहते जो आज शरीर छूटे तो पीछे सब उसका गुणगान करें! ऐसे तो नहीं मैं किसी के लिए बोझ हूँ? यह तो किसी के मुख से नहीं निकलेगा कि अच्छा हुआ बोझ हल्का हुआ। तो अपनी स्थिति ऐसी लवली बनाओ जो हरेक के दिल से मेरी कलाओं का, गुणों का, सेवाओं का, विशेषताओं का वर्णन हो। हरेक गुणगान करे। हरेक के दिल से निकले कि फलानी आत्मा इतनी महान थी। जब हम वाह बाबा, वाह ड्रामा कहते!... तो हम बच्चों की भी सब वाह-वाह करें... ऐसा हरेक का चार्ट होना चाहिए।

बाबा ने हमें ड्रामा की भावी बता दी है, सब देख भी रहे हैं। सब दिन एक बरोबर नहीं होते, आज क्या है कल क्या होगा। बाबा ने इशारा दे दिया है जो करना है सो आज करो। तो देखना है – कि हम समय के पहले रुद्र बाबा पर पूरा-पूरा बलि चढ़ चुके हैं, बाबा कहते बच्चे, अपना पुराना सब कुछ समर्पित कर दो तो मैं तुम्हें नया तन, नया मन और नया धन दूँ अर्थात् नई दुनिया में जब प्रकृति सतोप्रधान है तो वहाँ तुम्हारा सब कुछ नया होगा। तो देखना है कि हमने अपने पुराने संस्कारों की, स्वभावों की बलि चढ़ा दी है? मैं ऐसा कर्म कर रहीं हूँ जो दूसरा मुझसे प्रेरणा ले! अगर मेरी बुद्धि अनेक तरफ भटकेगी, तो जरूर बाबा से बुद्धि ऑफ हो जायेगी। समझो किसी भी कारण से थोड़ी घड़ी के लिए मैं असन्तुष्ट हुई... तो क्या उस समय बाबा के प्रति हमारे संकल्प चलेंगे। कोई में जिद्द है, फालतू बोलने का संस्कार है... तो मैं पूछती अगर कल शरीर छूट जाए तो क्या गति होगी! जब हम देख रहे हैं कि सबको उड़ना है तो क्यों न हम अपनी ऐसी श्रेष्ठ स्थिति बनायें।

हमारे स्वर्ग में सदा सूर्य उदय होगा, पूर्णिमा का चांद चमकता रहेगा... अंधकार आ नहीं सकता, लेकिन वह तब होगा जब संगम पर हमारे हर स्थान पर 24 घण्टा योग का दीवा जलता रहे। योग की ज्योति ऐसी जगाओ जो आने वाले ऐसा अनुभव करें कि यहाँ योग का सूर्य चमक रहा है। सदा योगी जीवन की भासना रहे। योग के वायब्रेशन रहें। इसके लिए निमित्त बनने वालों में ज्ञान और योग का पूरा-पूरा इन्ट्रेस्ट और उसके लिए बार-बार अटेन्शन भी चाहिए। वर्तमान समय तो चारों तरफ ऐसी तपस्या की लहर चाहिए। सभी अपने-अपने स्थानों को तपस्या कुण्ड बनाओ। यह तपस्या की लगन ही सब विघ्नों को समाप्त करने वाली है। इससे ही पुराने संस्कार-स्वभाव, तेरा-मेरा परिवर्तन होगा।

जितना-जितना हमारा व्यवहार, हमारा खान-पान, हमारी अनासक्त वृत्ति, हमारा बोल-चाल योगयुक्त होगा उतना हमारी योगी लाइफ सबको आकर्षित करेगी। हम सब त्यागी और योगी बच्चे हैं, हमारी दिल सब बातों में तृप्त चाहिए। त्याग तपस्या का प्रैक्टिकल पाठ हमें पढ़ना है। हम बाबा के बहुत रॉयल बच्चे हैं। सदा लक्ष्य रहे – 'जो कर्म मैं करूँगा – मुझे देख दूसरे करेंगे'। तो हमारा हर कदम, हमारा हर संकल्प, बोल, खान-पान... ऐसा लगे जैसे मैं हर घड़ी पदमों की कमाई जमा कर रहीं हूँ। तो हमें ऐसा रॉयल होना चाहिए – ऐसी चलन होनी चाहिए जैसे सचमुच कोई रूलर हैं।

इस दीपावली पर हरेक अपने आप से संकल्प करो कि अब हम बाबा मीत के साथ आपस में एक दो के मीत बनकर, प्यार का दीप जलाकर सदा रखेंगे। अभी बाबा के मिलने के दिन समीप आ रहे हैं, तो हरेक बाबा को अपनी यह रिजल्ट दे। एक दूसरे में सूक्ष्म मात्रा में भी मनमुटाव हो, तो उसे मिटाकर अपने को एक स्नेह के सूत्र में बांधो। हरेक आत्मा के अपने-अपने घर में यह दीप जगे तो सचमुच सृष्टि पर स्वर्ग आ जायेगा। जो करेगा सो पायेगा। तो अब ऐसा मीत बनो जो लगे कि सच्ची-सच्ची दीपावली मनाई।

अब तो बाबा को हमारे घर का गेट खोलना है, बाबा कहते भी हैं बच्चे स्वर्ग तब स्थापन होगा जब विनाश होगा और विनाश तब होगा जब तुम बच्चे कर्मातीत बनेंगे। तो कर्मातीत बनने के लिए हरेक अपना-अपना चार्ट चेक करे, देखना यह है कि हम प्रैक्टिकल सभी बातों से मुक्त हुए हैं अर्थात् मर चुके हैं? सब बातों से परे-परे रहते? परे रहो तो वायुमण्डल पॉवरफुल बन जायेगा।

बाबा हमारी कितनी पालना कर रहा है, उसका रिटर्न भी हमें देना है। जितना-जितना हम मन्सा-वाचा-कर्मणा सर्विस पर रहें उतना हमारी बुद्धि फ्रेश रहेगी, खुशी रहेगी। जितना बिजी उतना खुशी। फ्री टाइम इधर उधर गँवाने के बदले योग में बैठो, तपस्या करो। अपनी घड़ियों को सफल करो। घड़ियाँ सफल होंगी याद की यात्रा से।

बाबा ने हम बच्चों पर बहुत बड़ी जिम्मेवारी रखी है। हमें सारी दुनिया देख रही है। दुनिया से हम निराले हैं, दुनिया हमसे निराली है... हमें शान्ति और प्रेम के एक सूत्र में बंधकर दुनिया को बांधना है, अपने वायब्रेशन दुनिया को देने हैं। अच्छा।